nbt.india
मूल्य : एक प्रति ` 0.50
वार्षिक ` 5.00
साक्षर भारत

नेशनल बुक ट्रस्ट साक्षरता संवाद

साक्षरताकर्मियों के लिए

अगस्त 2014 वर्ष 19, अंक 8

जन शिक्षण संस्थान : एक परिचय

'जन शिक्षण संस्थान' (जेएसएस) भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय, स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता विभाग के राष्ट्रीय साक्षरता मिशन प्राधिकरण द्वारा प्रायोजित है। इसका उद्देश्य 15 से 35 साल तक के युवाओं को अनौपचारिक व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करके स्वावलंबी बनाना है। इस संगठन का कार्य शहरी/ग्रामीण जनसंख्या, विशेषकर नवसाक्षरों, अर्ध साक्षर, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, महिलाओं और बालिकाओं, अध्ययन बीच में छोड़ देने वालों तथा प्रवासी कामगारों आदि के लिए व सामाजिक-आर्थिक रूप से पिछड़े और शैक्षिक रूप से अलाभकारी समूहों के लिए शैक्षिक और व्यावसायिक विकास करना है।

पाठ्यक्रम जिनके लिए जेएसएस में प्रशिक्षण दिए जाते हैं उनमें कटाई, सिलाई और परिधान बनाना, बुनाई और कढ़ाई, सौंदर्य और स्वास्थ्य देखभाल, हस्तशिल्प, कला, चित्रांकन और चित्रकारी, इलेक्ट्रॉनिक, वेल्डिंग, मोबाइल फोन रिपेयरिंग, ऑटोमोबाइल्स, मधुमक्खी पालन, मशरूम उत्पादन, फूलों की खेती आदि शामिल हैं। सालाना लगभग 17 लाख युवा विभिन्न पाठ्यक्रम से प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं।

जन शिक्षण संस्थान (बोकारो) ने मिट्टी की डिजाइनर टाइल्स निर्माण का अपने किस्म का नया पाठ्यक्रम प्रारंभ किया हुआ है। इसके साथ ही भिक्षाटन द्वारा जीवन-यापन करने वालों को कुशल एवं निपुण बनाकर उन्हें स्वावलंबी बनाने का महत्वाकांक्षी अभियान शुरू किया गया है। एनआईसी जन शिक्षण संस्थानों/राज्य संसाधन केंद्रों के लिए वेब आधारित मॉनिटरिंग प्रणाली विकसित की जा रही है। एनआईसी ने जन शिक्षण संस्थाओं के वेब आधारित प्रबंधन और मॉनिटरिंग प्रणाली शुरू की है जो 'कौशल विकास और प्रौढ़ शिक्षा के लिए ऐच्छिक संस्थाओं को सहायता' नामक योजना का मुख्य भाग है। जन शिक्षण संस्थाओं की प्रणाली में मुख्य व्यावहारिकताओं को शामिल किया गया है, जिनमें व्यय का ब्योरा, विकास पाठ्यक्रम तथा फीडबैक तंत्र शामिल है।

नए प्रयास

राष्ट्रीय साक्षरता मिशन प्राधिकरण द्वारा जन शिक्षण संस्थाओं का कार्य व्यवस्थित एवं सुचारु रूप से चलाने के लिए विशेष कदम उठाए गए हैं :

- जन शिक्षण संस्थाओं की वार्षिक कार्य-योजना को व्यवस्थित रूप से कंप्यूटरीकृत कर लिया गया है।
- जन शिक्षण संस्थाओं के उत्पादों को प्रसारित करने के लिए उत्पादों की प्रदर्शनी को क्षेत्रीय स्तर पर व्यवस्थित कर लिया गया है।
- जेएसएस की कार्य-निष्पादन लेखा परीक्षा को शुरू करने के लिए आईपीआई, सीएसएमएस, एफएमआरआरएस जैसी निर्धारित विशेषज्ञ समितियों को जन शिक्षण संस्थाओं को लेखा परीक्षा का कार्य सौंपा गया है।
- व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के आकलन के मानकीकरण के लिए जन शिक्षण संस्थाओं में क्षेत्रवार कार्यशालाएँ आयोजित की गई हैं।

देश में शुरू किए साक्षरता अभियान और पिछले सालों में आए आर्थिक तथा सामाजिक बदलावों के कारण नवसाक्षरों की बढ़ती संख्या को देखते हुए इस बहु-आयामी शिक्षण संस्थान की भूमिका और कार्यक्षेत्र कई गुना बढ़ गया है। बदलते परिदृश्य में यह संस्थान जिला स्तर की संसाधन उपलब्ध कराने वाली एजेंसियों खासकर व्यावसायिक प्रशिक्षण और कौशल विकास कार्यक्रमों के बारे में नवसाक्षरों तथा सतत शिक्षा कार्यक्रम के लक्षित समूहों के लिए संसाधन एजेंसी के रूप में भी अपनी भूमिका निभा रहा है।

राज्य संदर्भ केंद्र, राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति, जयपुर के प्रकाशन

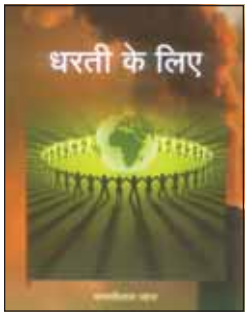

धरती के लिए

भगवतीलाल व्यास पृ. 32 ` 11.00

प्रदूषण के विभिन्न रूपों को सरल भाषा में, उदाहरण देकर चित्रांकन के साथ समझाया गया है। पानी का प्रदूषण, हवा का प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण इन सभी पर चर्चा है यहाँ। कीटनाशकों के प्रयोग में सावधानी, जल स्रोत को सुरक्षित रखने आदि के बारे में बताया गया है। धुआँ से फैलने वाले प्रदूषण के अंतर्गत घरेलू धुआँ एवं गाड़ियों से, चिमनियों से निकलने वाला धुआँ आदि शामिल है। वन संरक्षण की भी बात कही गई है।

लो आ गया घर

दिनेश सिंदल पृ. 8 ` 8.00

खुशवंत सिंह गाँव में रहते हैं। ठीक-ठाक जमीन है। बेटा विदेश में अधिकारी है। बहू और पोती साथ में रहती है। पोती मुन्नी गाँव के स्कूल से 5वीं पास कर बड़े स्कूल चली गई। बड़े स्कूल जाने के लिए बस लेनी पड़ती है। वापसी में बस से उतरने पर दादा जी उसे घर लाते हैं। रास्ते में तरह-तरह की बातें होती हैं, पर ज्यादातर ज्ञान-विज्ञान की। बातों-ही-बातों में मुन्नी जान जाती है कि कपड़े सूखते कैसे हैं, कुत्ते गरमियों में जीभ क्यों बाहर निकाले रहते हैं, पसीना होने पर ठंडक क्यों महसूस होती है आदि।

तरकीब

संदीप लेले पृ. 12 ` 5.00

छह कहानियों का संग्रह। पशु-पक्षियों को पात्र बनाकर काफी अच्छा संदेश दिया गया है। संकट को टालने के लिए संकट का सामना करना चाहिए। बड़बोलेपन से बचना चाहिए, इससे नुकसान भी हो सकता है। बदमाश लोग हमेशा बेवकूफ नहीं बना सकते। एक के लिए जो अच्छा है दूसरे के लिए वह बुरा भी हो सकता है। चालाकी हमेशा सफल नहीं होती, कभी-कभी वह उलटे गले पड़ जाती है। अपना काम खुद करना चाहिए। तीसरे की मदद लेने पर घाटा भी हो सकता है। यही संदेश है इन कहानियों में।

भोपाजी का भँवर

सत्यदेव संवितेन्द्र पृ. 12 ` 9.50

पाखंडी भोपाजी की कथा। गाँव के भोले-भाले लोगों को अंधविश्वास के जाल में फँसाकर भूत-प्रेत बाधा का तथाकथित इलाज करते। इलाज में जूता सुँघाया जाता, चिमटा हवा में लहराया जाता, डमरू बजाया जाता, जोर से हुँकार भरी जाती, रोगी के बाल पकड़कर खींचे जाते, मार-पिटाई भी होती, और यह सब भूत भगाने के नाम पर। एक बार पाखंडी भोपाजी का बेटा बीमार पड़ा तो उसने ऐसा कुछ नहीं किया और डॉक्टर से इलाज की बात कही। गाँववालों के सामने भोपाजी का भेद खुल गया।

उपर्युक्त पुस्तकें राज्य संदर्भ केंद्र, जयपुर, राजस्थान द्वारा प्रकाशित हैं। नवसाक्षरों को ध्यान में रखकर लिखी गई ये पुस्तकें सामान्य पाठकों के लिए भी उपयोगी हैं। पाठक अगर इन पुस्तकों को पढ़ना चाहें तो वे निम्न पते पर संपर्क कर पुस्तकें मँगा सकते हैं :

राज्य संदर्भ केंद्र
राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति
7-ए, झालाना संस्थान क्षेत्र, जयपुर-302004
ई-मेल : directorsrcjaipur@yahoo.in
वेबसाइट : www.srcraea.org

नवसाक्षरों के लिए पुस्तकें

हर विषय की पुस्तकें – अपनी भाषा में रोचक, ज्ञानवर्धक पुस्तकों का सूची-पत्र मँगवाने के लिए आज ही निम्नलिखित पते पर संपर्क करें :

प्रबंधक (विक्रय एवं विपणन)
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
(नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया)
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेलः office.nbt@nic.in • वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत से प्रकाशित 'नवसाक्षर साहित्यमाला' के अंतर्गत नवीनतम पुस्तकें : एक परिचय

गलत संगत

जनार्दन मिश्र

पृ. 16 ` 15.00

रमेश के पिता प्राइमरी स्कूल में मास्टर थे। गाँव में उनका बड़ा सम्मान था। उनकी चार संतानें थीं—तीन बेटियाँ और सबसे छोटा बेटा। बेटा रमेश बचपन से ही शरारती और जिद्दी था। उसे माँ का पूरा लाड़-प्यार मिलता। बेशक, इस कारण से उसकी बहनें उपेक्षित रह जातीं। मास्टर जी पत्नी को समझाते भी, पर पुत्रमोह में जकड़ी माँ पर असर न पड़ता। रमेश ले-देकर 8वीं पास कर सका। मास्टर जी रिटायर हो गए। तीनों बेटियाँ अपनी ससुराल चली गईं। इधर, रमेश की आदतें बिगड़ती जा रही थीं। वह चोरी करता, नशा करता। पिता दुखी होते। वह पत्नी से अपने बेटे की करतूत बताते। पर मास्टर जी की पत्नी इस पर आग-बबूला हो जातीं।

एक दिन घर में जब मास्टर जी नहीं थे, उनके यहाँ पुलिसवाले आए। वे रमेश को खोज रहे थे। रमेश की माँ हैरान। पुलिसवाले रमेश के पिता से भी मिलना चाहते थे। लेकिन रमेश व उसके पिता घर में थे नहीं तो पुलिसवालों ने रमेश की माँ को रमेश के तलाश की वजह बता दी। दरअसल, रमेश की डकैती के एक मामले में तलाश की जा रही थी। डकैती शब्द सुनकर रमेश की माँ हिल गई। संयोगवश, जब रमेश के पिता जरा जल्द ही घर लौटे तो पुलिसवालों ने उन्हें सारी कहानी बताई। मास्टर जी ने पुलिस को सहयोग करते हुए अपने रिश्तेदारों के पते बता दिए। रमेश पकड़ा गया। उसे पाँच साल की सजा हुई। जेल जाते समय रमेश ने अपनी माँ से कहा—मुझे बचपन में गलत संगत से टोका होता तो यह नौबत नहीं आती।

ISBN 978-81-237-7203-5

चिनगारी

जौली अंकल

पृ. 24 ` 18.00

तीन कहानियों का संग्रह। पहली कहानी 'चिनगारी' एक पेंटर और उसकी बेटी की कहानी है। एक दुर्घटना में पेंटर पिता की मृत्यु हो जाती है, लेकिन मृत्यु से पूर्व वह अपनी बेटी से आगे पढ़ाई जारी रखने की इच्छा व्यक्त करता है। वह कहता है कि खूब पढ़ो और अफसर बनो। लड़की अपने पिता की मौत से दुखी तो बहुत हुई, पर उनकी अंतिम इच्छा का मान रखते हुए वह खूब मन लगाकर पढ़ती है। उसकी माँ भी उससे वादा लेती है कि चाहे कैसी भी समस्या आए वह अपने पिता द्वारा जलाई गई चिनगारी को बुझने नहीं देगी। मेहनत और लगन रंग लाई और लड़की अफसर बन गई।

दूसरी कहानी 'सोच में बदलाव' में यह संदेश है कि सोच से ही दुनिया बदलती है। छाया देवी की सहेली कनाडा से भारत आती है और अपनी सहेली के यहाँ ठहरती है। वह जब शहर की ऐसी बदहाल स्थिति देखती है तो दुखी होती है। वह कहती है—शहर और देश का आधुनिकीकरण करने से ही कुछ नहीं होता, अपनी सोच का भी आधुनिकीकरण जरूरी है।

तीसरी कहानी 'ज्ञान की खान' में कपिल अपनी पत्नी के साथ घूमने जाता है। यात्रा में उसकी पत्नी कई किताबें साथ ले जाती है। कपिल हैरान होता है, यात्रा में किताबों का क्या काम! पत्नी उसे समझाती है कि किताबें ज्ञान का खान होती हैं। किताबों से अच्छी दोस्त और कोई नहीं होती। पति को बात समझ में आ जाती है।

ISBN 978-81-237-7202-8

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत (नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया) और उसकी गतिविधियों तथा प्रकाशनों के बारे में विस्तृत जानकारी के लिए अवलोकन करें :
वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत से प्रकाशित 'नवसाक्षर साहित्यमाला' के अंतर्गत कुछ पुस्तकें : एक परिचय

जैसा बोओगे

सु. समुत्तिरम; अनु. : विजयलक्ष्मी सुंदरराजन

पृ. 16 ` 10.00

जो जैसा करता है वैसा ही पाता है। इसी भावभूमि पर है यह पुस्तक। बहू कमला अपने ससुर का तनिक भी खयाल नहीं रखती। उलटे, बात-बात पर ताने मारती है या फिर उनकी अवहेलना करती है। पोते-बहू के साथ रहने वाले उस वृद्ध को समय पर खाना भी नसीब नहीं होता, जबकि वे कई बीमारियों से ग्रस्त हैं और उन्हें समय पर खाना-पीना जरूरी होता है। एक दिन घर में बहू के पिता जी, रामनाथन आते हैं। कमला स्वयं उन्हें लेने जाती है और रास्ते में ही होटल में खिला-पिलाकर लाती है। घर में ससुर बगैर खाने के बेहाल हैं। अपने पिता रामनाथन की खातिरदारी में रमी कमला ससुर को मानो भूल ही गई थी। लेकिन जब रामनाथन के जाने का वक्त हुआ तो बेटी की खातिरदारी से अभिभूत पिता का दर्द सैलाब बनकर बह निकला। घर में अपनी बहू के दुर्व्यवहार का हाल उन्होंने रोते-रोते अपनी बेटी से कह डाला। पिता के जाने के बाद भूख से बेहाल ससुर जब नल का पानी पीकर अपनी भूख और प्यास मिटा रहे थे, कमला दौड़कर उनके पास आई और उनके पैरों पर गिर पड़ी। कमला को अब अपनी गलती का अहसास हो गया था।

ISBN 978-81-237-3793-5

घर लौट चलो

मीनाक्षी स्वामी

पृ. 12 ` 8.00

राधा की गोपाल से शादी हुई तो सबने बड़ी तारीफ की। राधा ससुराल आई और घर के कामकाज में रम गई। दिन बीतने लगे। गोपाल राधा को बेहद प्यार करता, पर कई साल बीतने पर भी घर में किलकारी नहीं गूँजी। राधा की सास अब बेटे के दूसरे ब्याह के बारे में सोचने लगी। बच्चा नहीं होने के पीछे राधा को ही दोषी माना गया। एक दिन बात काफी बढ़ गई और राधा को घर से निकाल दिया गया। उसने घर जाकर भाई-भाभी से सारी बात कही। भाई बिरजू मामला सुलझाने आया भी, पर गोपाल ने उससे दूसरी शादी की बात कही। वहीं नए मेहमान भी बैठे थे जो अपनी बेटी के रिश्ते के लिए आए थे। माजरा समझ आते ही मेहमान लौट गए। बिरजू ने गोपाल से अपनी जाँच कराने की बात कही तो गोपाल ने राधा में ही दोष बताया। लेकिन एक दिन उसके मन में आया कि अपनी जाँच भी करा ले। डॉक्टर ने गोपाल में कमी बताई, दवा दी, गोपाल ठीक हो गया। अब वह फिर से राधा को अपनाना चाहता था। वह राधा के घर गया, अपनी गलती पर पछतावा किया और उससे घर लौटने को कहा।

ISBN978-81-237-1773-9

लालटेन

मधुकर सिंह

पृ. 20 ` 12.00

बथानी टोला कमजोर, दलित, वंचित, भूमिहीन लोगों का एक छोटा-सा टोला था। एक दिन गाँव के दूसरी छोर पर नदी-पार से कुछ हथियारबंद लोग रात के अँधेरे में नाविक को उसकी पत्नी और बच्चे सहित नदी पार करवाने का आदेश देते हैं। तूफानी मौसम के बावजूद वे नदी पार कर उतरते हैं और नाविक को वहीं इंतजार करने का आदेश दे बथानी टोला चल देते हैं। वहाँ जाकर मार-काट मचाते हैं। इधर, नाविक-पत्नी अपने पति से वहाँ से निकल चलने को कहती है। विचारानुसार बच्चों को नाव में सोता छोड़ नाव से लालटेन लेकर दोनों नदी किनारे-किनारे चल पड़ते हैं। आगे चलकर एक डरी हुई किशोरी उन्हें मिलती है। वे उसे ढाढ़स बँधाते हैं। लड़की अपने माँ-बाप, भाई-बहन के मारे जाने की बात बताती है। वे उस लड़की के हाथ में लालटेन थमाकर कहते हैं—यही लालटेन हत्यारों को जलाएगी, या फिर उनके मन के अँधेरे को दूर करेगी। जाओ, गाँववालों को खबरदार करो। फिर दोनों लौट आते हैं नाव के पास। हत्यारे भी तब तक लौट आते हैं। नाव उस पार चल पड़ती है। हत्यारे नाविक को सपरिवार मार डालते हैं, ताकि कोई गवाह न रहे। इधर, इस पार लड़की हाथ में लालटेन लेकर चीखती है, गुस्से से, डर से नहीं।

ISBN 978-81-237-2775-2

लीला का कमाल

केशव चंद्र

पृ. 20 ` 9.00

थली गाँव के लोगों की घांघर गाँव के लोगों से मार-पीट हो गई। वजह? थली गाँव के लोगों को अपने क्षेत्र से लकड़ी और घास लेने से घांघर वालों का इनकार। थली गाँव की लीला इससे चिंतित हुई। अब क्या करें? कहाँ से लकड़ी-घास प्राप्त करें? उसने मालती को साथ लिया, फिर गाँव की 50-60 औरतें जुट गईं। विचार होने लगा। जगता भी वहाँ पहुँचा, बातचीत में शामिल हुआ। मालती ने समाधान सुझाया—हमारे गाँव के आस-पास जो जमीन है उसमें घास उगाएँगे, पौधे लगाएँगे। विचार सबको रुचा। समस्या थी—उन खाली जगहों पर नागफनी और गरनू आदि जैसे पौधों की भरमार। नागफनी जमीन को ऊसर बनाती है। विचार बना, इन्हें काटकर घास, पौधे लगाए

जाएँ। जोशोखरोश से काम शुरू हुआ। मेहनत, एकता का फल मिला। झार-झंखाड़ खत्म हो गए। बरसात आते ही घास, पेड़-पौधे रोप दिए गये। मवेशियों से इन्हें बचाने को घेरेबंदी की गई। वन विभाग के अफसर ने भी इसमें मदद की। अब गाँव हरा-भरा और पहले की तरह पेड़-पौधों से परिपूर्ण हो गया। सब कहते हैं—यह लीला का कमाल है। ISBN 978-81-237-2315-0

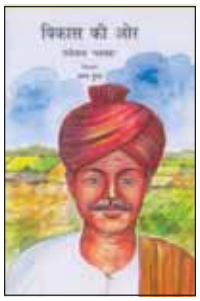

विकास की ओर

राधेलाल 'नवचक्र' पृ. 16 ` 9.00

मन में लगन हो और अपने गाँव-घर के प्रति आस्था, तो फिर गाँव का कायापलट होते देर नहीं लगती। इसी भावभूमि पर है यह पुस्तक। माधोपुर गाँव के धनेसर काका का इस दुनिया में कोई नहीं है। बेटा हुआ तो जल्द ही चल बसा और पत्नी भी परलोक सिधार गई। ऊपरवाले ने उन्हें कोई कमी नहीं रहने दी थी। गाँव-घर में कोई भी समस्या हो उसे वही सुलझाते। एक बार गाँव के चार युवकों को उन्होंने रास्ते में ताश खेलते देखा। वे दुखी हुए। बोले—समय को बरबाद मत करो। अपनी योग्यता का लाभ गाँव को दो। गाँव का सुधार होगा। तुम सबकी अपनी जिंदगी भी सुधरेगी। चारों युवक अलग-अलग विषयों में जानकार थे। एक कृषि स्नातक था, दूसरा शिक्षक प्रशिक्षण करके बैठा था, तीसरे ने आयुर्वेदिक चिकित्सा की डिग्री ले रखी थी और चौथा पशु-चिकित्सा में विशेषज्ञ था। काका ने इनमें जोश और प्रोत्साहन भरा तो ये सभी उठ खड़े हुए कुछ कर गुजरने को। फिर वे काका के साथ हो लिये, गाँव के विकास के लिए अपनी-अपनी सेवा देने। ISBN 978-81-237-5608-0

गलती का एहसास

अश्वघोष पृ. 16 ` 10.00

रामपुर गाँव में दो मित्र रहते थे। एक था भोला, दूसरा किसनू। एक बुद्धिमान, दूसरा बलवान। दोनों की गाँव में खेती थी। दोनों धुन के पक्के थे, परोपकारी थे। गाँव की कायापलट कर दी थी इन दोनों ने। एक जीर्ण-शीर्ण मंदिर का भी पुनरुद्धार किया था। उसी मंदिर में कहीं से एक बाबा आ गया। उसकी मूँछें काफी बड़ी थीं, सो, वह 'मूँछबाबा' के नाम से विख्यात हुआ। लोग अपना दुख-दर्द लेकर वहाँ पहुँचने लगे। पर वह बाबा था दरअसल धूर्त और पाखंडी। उसने गाँव की एक बुढ़िया के गेहूँ के पाँच दानों को सोने के सिक्के में बदल दिया, और बुधिया के 10-10 के नोटों को 100-100 का नोट बना डाला। भोला और किसनू बाबा के इस 'चमत्कार' से परेशान थे। जानते थे कि बाबा ठग है। बाबा कुछ देकर सब कुछ हड़पने की नीति पर चल रहा था। लेकिन भोला और किसनू ने बाबा को गाँव से भगाने की जो जुगत भिड़ाई तो हुआ यह कि सुबह होते ही गाँववाले बाबा की मूँछें उखाड़ने पर पिल पड़े। आखिर कैसे हुआ यह सब? इसे जानने के लिए पुस्तक पढ़ें। ISBN 978-81-237-4354-7

गुंजा की नैनी

कासिम खुर्शीद पृ. 14 ` 9.00

किशनपुर हरे-भरे पहाड़ों से घिरा हुआ एक गाँव है। उस गाँव में मनोहर सिंह पत्नी गुंजा और बेटी नैनी के साथ रहते थे। एक दिन गुंजा की बहन अपने बच्चों के साथ घूमने किशनपुर आई। मनोहर सिंह बच्चों को लेकर पहाड़ के ऊपर गया था। संयोगवश एक बच्चा पहाड़ी के किनारे पर चला गया था। उसे पकड़ने मनोहर गया कि संतुलन बिगड़ने से वह गिर पड़ा। उसके तत्काल प्राण-पखेरू उड़ गए। गुंजा अब अकेली रह गई, नैनी के साथ। एक बार जब मनोहर जीवित था उसने गुंजा को मुखिया जी से माँगकर मेहंदी की खेती वाली किताब दी थी। गुंजा ने उसमें रुचि नहीं ली थी। पिता के नहीं रहने पर एक दिन नैनी चुपके से घर से निकल गई और मुखिया जी के यहाँ से वही किताब माँगकर लाई। नैनी के घर में नहीं मिलने से हैरान-परेशान गुंजा उसे खोजने जब निकली तो नैनी अपनी सहेलियों संग मिली—वही मेहंदी की खेती वाली किताब हाथ में लिये। गुंजा की आँखों से अविरल धार बहने लगी। ISBN 978-81-237-5490-1

देर है, अंधेर नहीं

वीरेन्द्र तंवर पृ. 12 ` 6.00

करेली गाँव में कला अपने पति किसन व दो बच्चों के साथ रहती थी। किसन पत्नी पर शक करता था कि उसके किसी अन्य के साथ अवैध संबंध हैं। इस बात पर उसने पंच भी बिठाया। कला को पंचों ने बुलावा भेजा। कला ने मना किया तो उसे घसीटकर लाया गया। कला अपने ऊपर लगाये गए लांछन से आहत और क्रोधित हुई। उसने पंच को मारा। पंचों ने ऐसा देखा तो कला को नीम के पेड़ से बाँध दिया गया। यह सब गाँववालों और कला के माता-पिता के सामने हो रहा था। कुछ लोग कला को मार-पीट रहे थे। कुछ कपड़े फाड़ रहे थे। कला की माँ लीला सामने आकर खड़ी हो गई। कला की इज्जत तो बच गई, पर घटना से आहत कला ने अगले दिन आत्महत्या कर ली। गाँववाले चुप। कला की माँ की फरियाद किसी ने नहीं सुनी, पुलिसवाले ने भी नहीं। एक युवक रमेश लीला की मदद में सामने आया। मानवाधिकार आयोग ने अपराधियों पर उचित कार्रवाई की। सच है, देर है, अंधेर नहीं। ISBN 978-81-237-2750-9

प्रेरक कथा

रूढ़ियों को तोड़ा है

रेल का इंजन आदमी चलाते हैं। पर झारखंड के एक गरीब आदिवासी परिवार की 27 वर्षीय महिला लक्ष्मी लाकरा ने इस धारा का रुख बदल दिया है। उत्तरी रेलवे की वह पहली महिला इंजन चालक है।

लक्ष्मी के माता-पिता पढ़े-लिखे नहीं हैं, पर उन्होंने अपने बच्चों को पढ़ाने के लिए बहुत संघर्ष किया। लक्ष्मी की शिक्षा एक सरकारी स्कूल में हुई। स्कूल में पढ़ने के साथ-साथ लक्ष्मी घर के कामों व अन्य जिम्मेदारियों में हाथ भी बँटाती रही। उसने मन लगाकर और मेहनत से पढ़ाई की और स्कूल पूरा करके इलेक्ट्रॉनिक्स में डिप्लोमा अर्जित किया। फिर वह रेलवे बोर्ड की परीक्षा में बैठी और पहली ही कोशिश में उत्तीर्ण हो गई।

लक्ष्मी कहती है, ''मुझे चुनौतियों से खेलना पसंद है और जैसे ही कोई यह कहता है कि फलाँ काम लड़कियों के लिए नहीं है, मैं उसे करके रहती हूँ।'' लक्ष्मी के जीवन में ऐसा करने के अनेक अवसर आए। जब वह इलेक्ट्रॉनिक्स करना चाहती थी, जब उसने पॉलीटेक्निक में मोटर साइकिल चलाई और जब उसने तय किया कि वह इंजन ड्राइवर बनेगी।

उसका दृष्टिकोण सीधा-सादा है—जब तक मुझे मजा आ रहा है और मैं किसी को नुकसान नहीं पहुँचा रही और मैं अच्छे से रह पा रही हूँ और अपने माता-पिता की मदद कर पा रही हूँ तो मैं अपने तरीके से क्यों न जीऊँ?''

(*ड्राइविंग हर ट्रेन,* नीता लाल, वीमेंस फीचर सर्विस से रूपांतरित)

एनसीईआरटी से प्रकाशित पुस्तक 'औरतों ने बदली दुनिया' से साभार।

पाठक मंच बुलेटिन

बच्चों की द्विभाषी पत्रिका

वार्षिक शुल्क : ` 100.00

संपादक, राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत

(नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया)

नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया

फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070

राज्य संसाधन केंद्रों की सूची (गतांक से आगे)

मेघालय

निदेशक
राज्य संसाधन केंद्र
नॉर्थ-ईस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी (एनईएचयू)
बिजनी कॉम्प्लेक्स, लैटुमख्रा
शिलांग-793003, मेघालय
ई-मेल : eugene_india@yahoo.com

पंजाब

निदेशक
क्षेत्रीय संसाधन केंद्र
पंजाब यूनिवर्सिटी
छत्तीसगढ़-160014, पंजाब
ई-मेल : manjeet_51@hotmail.com

राजस्थान

निदेशक
राज्य संसाधन केंद्र
राजस्थान एडल्ट एजुकेशन एसोसिएशन
7-ए, झालाना डुंगरी इंस्टीट्यूशनल एरिया
जयपुर-302004, राजस्थान
ई-मेल : directorsrcjaipur@yahoo.in

तमिलनाडु

निदेशक
राज्य संसाधन केंद्र
आदिशेषैया भवन
20, फर्स्ट स्ट्रीट
वेंकटरत्नम नगर एक्सटेंशन
अदयार, चेन्नै-600020
तमिलनाडु
ई-मेल : srctn@md3.vsnl.net.in

त्रिपुरा

निदेशक आई/सी
राज्य संसाधन केंद्र
मालेरमठ, निकट नजरुल छात्रावास
अगरतला-799001, त्रिपुरा
ई-मेल : src_tripura@yahoo.com

ऐसा क्यों?

(भाग-2)

कांता कहती है...

अभी-अभी मेरा विवाह हुआ।
खेती के बारे में, मैं सब कुछ जानती हूँ।
इसलिए मैं घर में पूछती रहती हूँ :
"हमारी जमीन कितनी है?
उसमें कौन-सी फसल उगी है?
उसमें कितना खर्चा हुआ है?
उसमें कितनी आमदनी हुई है?
अब क्या करना है?"

पर मुझे कोई जवाब नहीं देता।
सब कहते हैं,
"महिलाओं को यह सब जानने की क्या जरूरत?"
मैं नहीं समझ पाती।

ऐसा क्यों?
क्या यह ठीक है?

सुशीला कहती है...

मैं खेत में मजदूरी करती हूँ।
जमीन खोदती हूँ, बीज बोती हूँ, फसल काटती हूँ।
सब कुछ करती हूँ।
पुरुष भी मजदूरी करते हैं।
शाम को मजदूरी के पैसे मिलते हैं।
मुझे पुरुषों से कम पैसे मिलते हैं।

मैं सोचती हूँ,
"पैसे कम क्यों दिए?"
सेठ कहते हैं, "महिलाओं को हमेशा हर जगह कम ही मजदूरी मिलती है।"

मैं सोचती हूँ,
ऐसा क्यों?
क्या यह ठीक है?

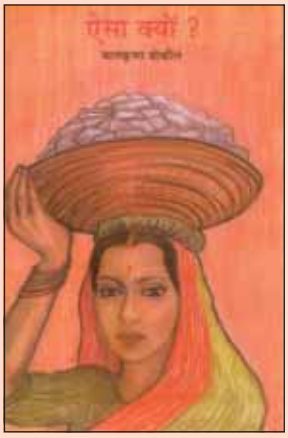

सरला कहती है...

मैं सुबह से रात तक काम करती हूँ।
छोटे-बड़े सभी काम करती हूँ।
सुबह मुझे जल्दी भूख लगती है।
लेकिन मैं दूसरों से पहले नहीं खाती।
सबके खाना खा लेने के बाद ही खाती हूँ।
जो बचा हो वही खाती हूँ।
कभी-कभी तो बासी खाना खाती हूँ।
अकेले-अकेले खाना मुझे अच्छा नहीं लगता।

पुरुष मुझसे कम काम करते हैं।
जो अधिक मेहनत करे, उसे अधिक खाना, खाना चाहिए।
पर ऐसा नहीं होता।

ऐसा क्यों?
क्या यह ठीक है?

मंजू कहती है...

मुझे बेटी हुई।
सब नाराज हो गए।
बेटी पढ़ सकती है।
परिवार की देखभाल कर सकती है।
घर का नाम रोशन कर सकती है।
अच्छे-से बातचीत कर सकती है।
मेहनत का काम कर सकती है।
किसी बात में वह कम नहीं होगी।
लेकिन फिर भी सभी नाराज हुए।

ऐसा क्यों?
क्या यह ठीक है?

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत (नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया) से प्रकाशित पुस्तक 'ऐसा क्यों?' (बालकृष्ण बोकील) से एक अंश

छोटे घाव

गिरने, किसी चीज से कटने या खरोंच लगने से चमड़ी का छिल जाना आम बात है। ऐसे में किसी बड़े इलाज की जरूरत नहीं होती। सिर्फ घाव को साफ रखना होता है। इससे कुछ दिन में वह अपने आप भर जाता है।

☑ *क्या करें :*

चोट लगते ही...

- घाव को साफ करने से पहले अपने हाथ साबुन-पानी से अच्छी तरह धोएँ।
- फिर घाव के इर्द-गिर्द की चमड़ी को साबुन-पानी से धोएँ। इससे उस पर जमी धूल-मिट्टी धुल जाएगी। ध्यान रखें कि गंदा पानी घाव पर न जाए।
- घाव को साफ करें। इसके लिए साबुन और साफ पानी इस्तेमाल में लाएँ। नहर या पोखर का पानी काम में लेते हों तो उसे उबाल लें। जब वह ठंडा हो जाए तो उससे घाव धोएँ।
- घाव को साफ कपड़े से ढक दें। उस पर टेप लगा दें या पट्टी बाँध दें।

R. N.I. No. 65414/96
Postal Regd. No. DL-SW-1/4078/2012-14
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 22/2012-14
Mailing date 25/26 same month
Date of publication 15/08/2014

- टेटनस से बचाव के टीके न लगे हों, तो डॉक्टर से राय लें। पहले पूरे टीके लगे हों, तो हर 10 साल बाद टेटनस टॉक्साइड का एक टीका लगवाते रहें। इससे व्यक्ति टेटनस से बचा रहता है। और, ऐसी दशा में उसे चोट लगते ही डॉक्टर के पास भागने की जरूरत नहीं पड़ती।

घाव भरने तक...

घाव को साफ रखें। इसके लिए उसे साफ कपड़े से ढककर रखें ताकि उस पर मक्खियाँ न बैठ सकें। ढके घाव में गंदगी भी नहीं जाती है। वह कुछ दिन में ही भर जाता है।

☒ *क्या न करें :*

- घाव पर कभी भी गंदा कपड़ा न बाँधें।

डॉ. यतीश अग्रवाल द्वारा लिखित तथा राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत (नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया) से प्रकाशित पुस्तक 'तुरंत उपचार' से एक अंश

'साक्षरता संवाद' के अंतिम दो पृष्ठ 7 और 8, नवसाक्षरों के लिए हैं। इसे अलग करके अन्य पठन सामग्री के साथ रखा जा सकता है।

संपादक : **उमा बंसल**
कार्यकारी संपादक : **दीपक कुमार गुप्ता**
संपादकीय सहयोग : **अल्पना भसीन**
उत्पादन अधिकारी : **नरेन्द्र कुमार**

साक्षर भारत
nbt.india

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
(नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया)
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेलः office.nbt@nic.in
वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

पाठकों से अनुरोध है कि वे **साक्षरता संवाद** के बारे में अपने विचार संपादक को लिखें।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की ओर से सतीश कुमार द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा पुष्पक प्रेस प्रा.लि., 203-204, डी.एस.आई.डी.सी. शेड, फेज-I, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित और राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 से प्रकाशित। संपादक : उमा बंसल।

एस.एस. इंटरप्राइजेज, प्रथम तल, जी.जी.-1/36बी, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से टाइपसेट।

भारत सरकार सेवार्थ

डाक वापसी की दशा में कृपया इस पते पर वापस करें :
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070